KHAN GLOBAL STUDIES
KGS Campus, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna - 6
Mob : 8877918018, 875735880
BPSC - Polity
By : Karan Sir

गठबंधन सरकार

गठबंधन सरकार का अर्थ

- 'गठबंधन' शब्द लैटिन भाषा के 'कोएलिटियो' से लिया गया है जिसका अर्थ है 'एक साथ बढ़ना' । राजनीतिक दृष्टि से गठबंधन का अर्थ विभिन्न राजनीतिक दलों का एक साथ सम्मिलित होना है।
- गठबंधन आम तौर पर तब होता है जब कोई भी राजनीतिक दल स्पष्ट बहुमत हासिल नहीं कर पाता है।
- यह आंतरिक राजनीतिक संघर्ष को कम करने में भी भूमिका निभा सकता है।
- एक गठबंधन सरकार वह होती है जो दो या दो से अधिक पार्टियों के गठबंधन से बनती है।

भारत में गठबंधन सरकार की पृष्ठभूमि
(Coalition Governments Background)

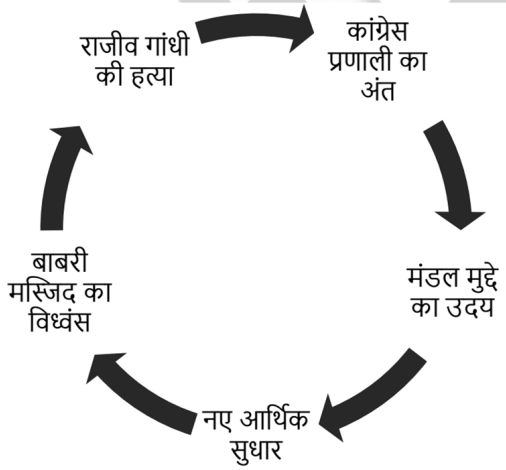

- **कांग्रेस प्रणाली का अंत**- वर्ष 1977 के आम चुनावों में कांग्रेस पार्टी की हार हुई और मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी और केंद्र में गठबंधन सरकार की स्थापना हुई।
- **मंडल मुद्दे का उदय**- केंद्र सरकार में अन्य पिछड़े वर्गों के लिए नौकरियों को आरक्षित करने की इसकी सिफारिशों को लागू करने के कारण मंडल आयोग के समर्थकों और विरोधियों के बीच विवाद बढ़ गया।
- **नए आर्थिक सुधार**- वर्ष 1991 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पि.वि. नरसिम्हा राव की सरकार के समय नई आर्थिक सुधार नीति की शुरुआत हुई। तत्पश्चात विभिन्न संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम शुरू हुआ और गठबंधन सरकार स्थापित होने लगी।
- **बाबरी मस्जिद का विध्वंस**- इसने भारत के राष्ट्रवाद और धर्मनिरपेक्षता के मुद्दे की शुरुआत की और भाजपा और हिंदुत्व की राजनीति का उदय हुआ।
- **राजीव गांधी की हत्या**- वर्ष 1991 में राजीव गाँधी की हत्या हुई और उसके बाद गठबंधन सरकार की स्थापना हुई।

गठबंधन सरकार की विशेषताएं

- गठबंधन सरकार की निम्नलिखित विशेषताएं हैं जिसे बिन्दुवार दर्शाया गया है-
  - ❖ यह भौतिक या मानसिक लाभ के लिए किया जाता है
  - ❖ गठबंधन की राजनीति एक स्थिर नहीं बल्कि एक गतिशील मामला है क्योंकि गठबंधन के नेता और समूह विघटित हो सकते हैं और नए समूह बना सकते हैं
  - ❖ गठबंधन राजनीति का मूलमंत्र, समझौता है और इसमें कठोर हठधर्मिता का कोई स्थान नहीं है।
  - ❖ गठबंधन एक न्यूनतम कार्यक्रम के आधार पर काम करता है, जो गठबंधन के प्रत्येक भागीदार के लिए आदर्श नहीं हो सकता है।
  - ❖ गठबंधन राजनीति की पहचान विचारधारा नहीं बल्कि व्यावहारिकता है।
  - ❖ गठबंधन समायोजन का उद्देश्य सत्ता पर कब्जा करना है।

भारत में गठबंधन की राजनीति के विकास के कारण
(Reasons Of Growth Of Coalition Politics In India)

- टिप्पणीकारों, वित्तीय विशेषज्ञों और अर्थशास्त्रियों द्वारा गठबंधन को नापसंद किया जाता है क्योंकि वे राजनीतिक चिंताओं को स्मार्ट अर्थशास्त्र को ओवरराइड करने की अनुमति दे सकते हैं।
- भारत की संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली के तहत विधायिका के पास कार्यकारी प्राधिकरण पर एक प्रभावी जांच के रूप में कार्य करने के सीमित साधन हैं, विशेष रूप से दल-बदल विरोधी कानून के पारित होने के बाद से।

- एकल-पक्षीय बहुमत को नीतियों पर चर्चा करने और बनाने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है, न ही नीतिगत कार्रवाई विफल होने पर उन्हें गंभीर राजनीतिक जोखिम का सामना करना पड़ता है। यह भारतीय अनुभव के लिए जिम्मेदार हो सकता है।
- इसके अलावा, प्रशासन को बाद में महत्वपूर्ण राजनीतिक खतरे का सामना करना पड़ेगा। गठबंधन के सहयोगी जनता के दबाव के आगे झुक गए और अपना समर्थन वापस ले लिया।
- ऐतिहासिक रूप से, एकल-पार्टी प्रशासनों में अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाने वाली नीतियों पर राजनीतिक संसाधनों को बर्बाद करने की अधिक संभावना रही है।

गठबंधन सरकार के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष

- गठबंधन सरकार के निम्नलिखित सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष है जिसे एक आरेख के माध्यम द्वारा दर्शाया गया है-

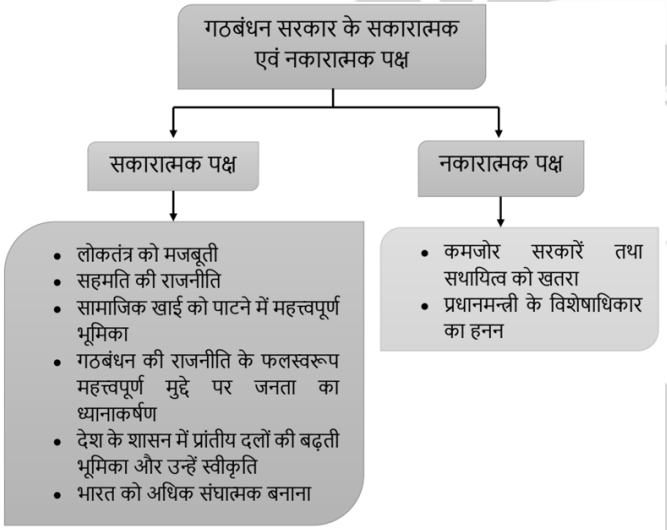

गठबंधन सरकार की सकारात्मक पक्ष

- **लोकतंत्र को मजबूती**- लोग लिंग, जाति, वर्ग और क्षेत्र सन्दर्भ में न्याय तथा लोकतंत्र के मुद्दे उठा रहे हैं।
- **सहमति की राजनीति**- गठबंधन राजनीति ने सहमति की राजनीति को जन्म दिया। यह सहमति कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर देश के वर्तमान विकास के लिए लाभकारी रही। इन मुद्दों में आर्थिक नीतियों के प्रति समन्वय व तालमेल सबसे महत्त्वपूर्ण रहा। कई दल संयुक्त रूप से इस बात को मानते हैं कि नई आर्थिक नीतियाँ देश में पहले की अपेक्षा आज विकास को लाने का मुख्य कारण रही है।
- **सामाजिक खाई को पाटने में महत्त्वपूर्ण भूमिका**- गठबंधन की राजनीति के माध्यम से जहाँ कई क्षेत्रीय पार्टियाँ अस्तित्व में आयीं, वहीं कई राष्ट्रीय पार्टियों ने कालांतर से दबी सामाजिक समस्याओं की जड़ें खोदी। बसपा ने दलित उत्थान, अन्य पार्टियों ने पिछड़ी जातियों के राजनीतिक और सामाजिक दावे की बात छेड़ी. ष्आरक्षणष् का मुद्दा जो इस पिछड़ेपन की समस्या के समाधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, इसी समीकरण की देन है। कई पार्टियों ने महिला घरेलू हिंसा, बाल अधिकार, शिक्षा के अधिकार जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों को भारतीय राजनीति का हिस्सा बनाया।
- **गठबंधन की राजनीति के फलस्वरूप महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर जनता का ध्यानाकर्षण**- गठबंधन युग के पहले एक दल के ही मुद्दे राष्ट्रीय मुद्दे पर हावी रहते थे। लेकिन गठबंधन के कारण अब कई महत्त्वपूर्ण मुद्दे राष्ट्र के समक्ष न मात्र लाये जाते हैं बल्कि उन पर वाद-विवाद की भी पहल की जाती है। भ्रष्टाचार को लेकर, अल्पसंख्यकों से जुड़े मुद्दे या कई परमाणु परियोजनाओं पर ऐसे विवाद होते रहे है।
- **देश के शासन में प्रांतीय दलों की बढ़ती भूमिका और उन्हें स्वीकृति**- वर्तमान सन्दर्भ में अब प्रांतीय और राष्ट्रीय दलों में भेद कम हो चुका है तथा कई महत्त्वपूर्ण मुद्दे इस कारण राष्ट्रीय मुद्दे बन कर उभरने लगे हैं।
- **भारत को अधिक संघात्मक बनाना**- क्षेत्रीय पार्टियों के उदय व उनकी प्रगति से भारतीय संघ मजबूत हो रहा है। अब ऐसे विवाद कम ही देखे जाते हैं जहाँ केंद्र की सरकार राज्य की सरकारों पर अनुचित दबाव और गैर-संवैधानिक हस्तक्षेप कर रही हो। गठबंधन को साथ लेकर चलना, कार्यसिद्धि पर अधिक जोर कहीं-न-कहीं राजनीतिक दलों की सोच को परिपक्व बनाने का कार्य कर रहा है।

गठबंधन सरकार की नकारात्मक पक्ष

- **कमजोर सरकारें तथा स्थायित्व को खतरा**- भारत में गठबंधन सरकार के अस्तित्व को लगातार सरकारों के परिवर्तन से एक नकारात्मक स्थिति की तरह लिया जाने लगा। अटलबिहारी वाजपेयी की 1996 में 13 दिन चली सरकार, उसके ठीक बाद 1996 जून से अप्रैल 1997 के बाद अल्पावधि तक चली देवगौड़ा की सरकार, फिर गुजराल की सरकार का आना और अल्पावधि में चले जाना और पुनः अटलबिहारी वाजपेयी की 13 महीने की सरकार ने गठबंधन की राजनीति की सबसे बड़ी दुर्बलता को दर्शाया। इस प्रकार की समीकरणों में ष्स्थायी अस्तित्व के संकट की झलक दिखी।
- **नीतियों के निर्माण में बाधा**- नीतियों के बदलने पर दबाव की लगातार बाध्यता भारत में गठबंधन सरकार के समक्ष हमेशा से यह चुनौती रही कि किसी भी विषय पर एक आम सहमति कैसी बनाई जाए? कई विदेशी संधियाँ इस तरह की बाध्यता से अक्सर प्रभावित होते रहे। उदाहरण के तौर पर वर्ष 2006 में भारत-अमेरिका नागरिक परमाणु समझौता ''हाइड एक्ट'' को लेकर तमाम चर्चाएँ कई स्तरों पर लोकसभा और राज्य सभा में झूलती रहीं। इस प्रकार की विकट परिस्थितियों ने न सिर्फ गठबंधन सरकार की मजबूरियों को स्पष्ट रूप से दिखाया बल्कि इससे भारतीय राजनीति की वर्तमान स्थिति पर कई प्रकार के विवादों, बहस और इनकी तार्किकता पर प्रश्नचिह्न लगाया।

☞ **अलग-अलग सिद्धांतों का होना**- अलग-अलग दलों में सैद्धांतिक आदर्शों में मतभेद गठबंधन सरकार के अस्तित्व को खतरा अक्सर इस सम्बन्ध में देखा जाता है कि कई दलों से मिलकर बनी सरकार को कई सिद्धांतों के मध्य एक समन्वय बनाना पड़ता है और असंतुलन की स्थिति से बचना पड़ता है। उदाहरण के लिए मार्क्स से सम्बंधित दलों की विचारधारा के कारण कई बार औद्योगिक निर्णयों को बदलना या पूर्णत: समाप्त करना पड़ा है। इस प्रकार के निर्णय न केवल घरेलू मुद्दों के परिवर्तन पर लागू किये जाते हैं बल्कि कई स्थितियों में बाहरी देश और संघ जैसे अमेरिका, यूरोपियन यूनियन (पूँजीवाद के प्रतिनिधि) से सम्बंधित नीतियों पर भी लिए जाते हैं। अत: आदर्शों पर मतभेद गठबंधन राजनीति की महत्त्वपूर्ण चुनौती है।

☞ **प्रधानमन्त्री के विशेषाधिकार का हनन**- मंत्रिमंडल के लिए सहयोगियों का चयन हमेशा प्रधानमन्त्री का विशेषाधिकार माना जाता है परन्तु गठबंधन सरकार में प्रधानमन्त्री का यह विशेषाधिकार बुरी तरह प्रभावित होता है क्योंकि क्षेत्रीय दलों के नेता यह तय करते हैं कि मंत्रिमंडल में उनके दल का नेतृत्व कौन-कौन करेंगे और यह भी कि उन्हें कौन-कौन विभाग दिए जायेंगे। कई नेता तो पहले से ही यह मंशा पाले रखते हैं कि उन्हें कौन-सा पद लेना है चाहे कैसे भी। गठबंधन सरकार की मजबूरी के कारण प्रधानमन्त्री को उनकी बात माननी पड़ती है।

भारत में गठबंधन सरकार का इतिहास (History of Coalition Government in India)

भारत में गठबंधन सरकार			
क्र.सं.	अवधि	गठबंधन	प्रधानमंत्री (पार्टी)
1.	1977-1979	जनता पार्टी	मोरारजी देसाई (कांग्रेस (ओ))
2.	1979-1980	जनता पार्टी (सेक्युलर)	चरण सिंह (जनता (एस))
3.	1989-1990	राष्ट्रीय मोर्चा	वीपी सिंह (जनता दल)
4.	1990-1991	जनता दल (समाजवादी) या समाजवादी जनता पार्टी	चंद्र शेखर (जनता दल (एस) या समाजवादी पार्टी)
5.	1996-1997	संयुक्त मोर्चा	एचडी देवेगौड़ा (जनता दल)
6.	1997-1998	संयुक्त मोर्चा	आईके गुजराल (जनता दल)
7.	1997-1998	बीजेपी के नेतृत्व वाला गठबंधन	एबी वाजपेयी (बीजेपी)
8.	1999-2004	राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA)	एबी वाजपेयी (बीजेपी)
9.	2004-2009	संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए)	मनमोहन सिंह (कांग्रेस)
10.	2009-2014	संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन-II (UPA-II)	मनमोहन सिंह (कांग्रेस)
11.	2014-2019	राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA)	नरेंद्र मोदी (बीजेपी)
12.	2019-वर्तमान	राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA)	नरेंद्र मोदी (बीजेपी)

❑❑❑